ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

द्विवेदी ज्योत्स्ना (2026). वैदिक कर्मकाण्ड और आचार्य दयानन्द, *International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(1), 59-67.*

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY RESEARCH & REVIEWS

journal homepage: www.ijmrr.online/index.php/home

वैदिक कर्मकाण्ड और आचार्य दयानन्द

डॉ. ज्योत्स्ना द्विवेदी

सहायक प्राध्यापक, संस्कृत (विभागाध्यक्ष)

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा (म.प्र.), भारत.

How to Cite the Article: द्विवेदी ज्योत्स्ना (2026). वैदिक कर्मकाण्ड और आचार्य दयानन्द, *International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(1), 59-67.*

https://doi.org/10.56815/ijmrr.v5i1.2026.59-67

Keywords

कर्मकाण्ड, नियम, विधि, निषेध प्रशमन, संध्या कर्म, नित्य, नैमित्तिक, काम्य, इष्टि इत्यादि।

Abstract

कर्मकाण्ड विधि विषयक आचार्य दयानन्द की दो ग्रन्थ एक संस्कार विधि दूसरा पंच महायज्ञ विधि। उसके अलावा सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में यथोचित वर्णन है। संस्कार विधि में दैनिक अग्निहोत्र को सामान्य प्रकरण में लिखते हुए उसको लगभग सभी संस्कारों के साथ विहित कर दिया है। ऋषि दयानन्द संस्कार विधि को कर्मकाण्ड का ग्रन्थ स्वीकार करते हुए लिखते हैं– "इसमें प्रथम ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना, पुनः स्वस्तिवाचन, शान्ति प्रकरण, तदनन्तर सामान्य प्रकरण, पश्चात् गर्भाधानादि अन्त्येष्टिपर्यन्न सोलह संस्कार क्रमशः लिखे हैं, और यहां सब मंत्रों का अर्थ नहीं लिखा है, क्योंकि इसमें कर्मकाण्ड का विधान हैं। इसलिये विशेषकर क्रिया–विधान लिखा है।" इस शोध पत्र में हम निम्न बिन्दुओं पर विचार रखेगें–

1. कर्मकाण्ड (विधि) के अंतर्गत आचार्य दयानन्द किन–किन विषयों को मान्य करते हैं?
2. अग्निहोत्रविधि में अन्य सनातन विधि से क्या भिन्नता है और क्यों?
3. क्या दयानन्द यज्ञ विधि–विधान हेतु ज्योतिष को मानते हैं? या सनातन वैदिक शगुन विचार में अपना सिद्धान्त भिन्न रखते हैं।
4. दयानन्द ने अपने विचार से वैदिक परम्परा की स्थापना की है अथवा सम्प्रदायवाद की स्थापना की है किञ्चित् विमर्श।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

द्विवेदी ज्योत्स्ना (2026). वैदिक कर्मकाण्ड और आचार्य दयानन्द, *International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(1), 59-67.*

1. INTRODUCTION

19 वीं शताब्दी में अवतरित आचार्य दयानन्द ने भारत वर्ष में अनेकविध क्रान्तिकारी सुधार आन्दोलन किये। आचार्य दयानन्द न केवल एक सामान्य समाज सुधारक थे अपितु वेदज्ञ, तत्वज्ञ, ऋषिकल्प आप्त पुरूष थे। आचार्य के जीवन का सबसे महत्वपूर्ण कार्य एवं उद्देश्य हैं– वेदों की पुनर्स्थापना। वेदों के विशुद्ध नैरूक्त प्रक्रिया अनुसार भाष्य तथा वेदानुकूल वैदिक कर्मकाण्ड विनियोग की परम्परा स्थापित करके ऋषि दयानन्द ने भारत के धार्मिक पाखण्डवाद पर गहरे प्रहार के साथ–साथ नये वैचारिक धर्म दर्शन का भी मार्ग प्रशस्त किया हैं।

<u>कर्मकाण्ड शब्द और दयानन्द</u> :– कर्मकाण्ड शब्द से ऋषि दयानन्द को पारम्परिक विधि–विनियोग में प्रयुक्त कर्मकाण्ड शब्द और कर्म अर्थात् जीवनीय क्रिया–कलाप में प्रयुक्त कर्म–काण्ड शब्द दोनों ही अभिप्रेत है। कर्मकाण्ड विषयक आचार्य दयानन्द के दो महत्वपूर्ण ग्रन्थ हैं– (1) संस्कार–विधि, (2) पंच महायज्ञ विधि।

संस्कार विधि[1] की भूमिका में आचार्य दयानन्द विधि–विनियोग पारम्परिक अर्थ से कर्मकाण्ड ही स्वीकारते हैं। आचार्य का कथन है– ''इसमें प्रथम ईश्वर की स्तुति–प्रार्थना–उपासना पुनः स्वस्तिवाचन, शान्तिपाठ, तदनन्तर सामान्य प्रकरण, पश्चात् गर्भाधानादि अन्त्येष्टिपर्यन्त सोलह संस्कार क्रमशः लिखे हैं, और यहां सब मंत्रों का अर्थ नहीं लिखा है, क्योंकि इसमें कर्मकाण्ड का विधान है। इसलिये विशेषकर क्रिया–विधान लिखा हैं। यहां तो केवल क्रिया करना ही मुख्य हैं।'' अर्थात् उपासना पद्धति से लेकर करणीय समस्त संस्कार पद्धतियों को दयानन्द कर्मकाण्ड शब्द से ही द्योतित करते हैं।

यहां यह विषय भी ध्यातव्य है कि आचार्य इसको पूजा–पद्धति के लिये रूढ़िगत नहीं मानते है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के वेदविषयविचार में लिखते हैं। तत्र द्वितीयो विषयः कर्मकाण्डाख्यः स सर्वः क्रियामयोऽस्ति। नैतेन विना विद्याभ्यास संज्ञाने अपि पूर्णे भवतः। बाह्यमानसव्यवहारयोर्वाबाह्यभ्यन्तरे युक्तत्वात् इत्यादि। हिन्दी भाषार्थ में ऋषि लिखते हैं– ''उनमें से दूसरा कर्मकाण्ड विषय है सो सब क्रिया प्रधान ही होता है, अग्निहोत्र से लेके अश्वमेध–पर्यन्त जो कर्मकाण्ड है, उसमें चार प्रकार के द्रव्यों का होम करना होता है। इस कर्मकाण्ड के दो प्रयोजन लिखते हैं'' उसके दो भेद मुख्य हैं– एक परमार्थ दूसरा लोक व्यवहार। प्रथम जो परम पुरूषार्थ रूप कहा उसमें परमेश्वर की स्तुति अर्थात् उसके सर्वशक्तिमत्वादि गुणों का कीर्त्तन उपदेश और श्रवण करना, प्रार्थना अर्थात् जिसे करके ईश्वर से सहायता की इच्छा करनी (उपासना) अर्थात् ईश्वर के स्वरूप में मग्न हो के उसकी सत्यभाषणादि आज्ञा का यथावत् पालन करना। इसी धर्म का जो ज्ञान और अनुष्ठान का यथावत् करना है, सो ही कर्मकाण्ड का प्रधान भाग है।[2] इस कथन से ऋषि का कर्मकाण्ड पर दृष्टिकोण स्पष्ट होता है कि–

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

द्विवेदी ज्योत्स्ना (2026). वैदिक कर्मकाण्ड और आचार्य दयानन्द, *International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(1), 59-67.*

1. परमेश्वर की उपासना स्तुति प्रधान कर्मकाण्ड हैं।
2. अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त क्रिया गौण कर्मकाण्ड हैं।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में अग्निहोत्र से अश्वमेध पर्यन्त क्रिया विषय में लिखते हुए उपर्युक्त कर्मकाण्ड परिभाषा से आगे का विचार प्रस्तुत करते हैं– इससे सब जगत् को सुख होता है। और जिसको भोजन छादन, विमानादि यान, कला कुशलता, यंत्र और सामाजिक नियम होने के लिये करते है, वह अधिकांश से कर्त्ता को ही सुख देने वाला होता है, अर्थात्– रूढिगत कर्मकाण्ड से भिन्न जो भी संसार से लोकोपकारी क्रिया है वह सभी कर्मकाण्ड शब्द से अभिहित मानना ही आचार्य दयानन्द का दृष्टि कोण है, और यह दृष्टिकोण सनातन शास्त्र सम्मत हैं– मीमांसाकार लिखते हैं।[3]

"द्रव्याणां तु क्रियार्थानां संस्कारः क्रतुधर्मः स्यात् तथा द्रव्यसंस्कारकर्मसु परार्थत्वात् फलश्रुति अर्थवादः स्यात्।" अर्थात् द्रव्य, संस्कार, कर्म या यथावत् उपयोग करना उपकारार्थ यही क्रतुधर्म है। "अत एव फलस्य श्रुतिः श्रवणमर्थवादोऽनर्थवारणाय भवति" ऐतरेय ब्राह्मण कार लिखते हैं–[4] यज्ञोऽपि तस्यै जनतायै कल्पते, यत्रैवं विद्वान् होता भवाति।

<u>याज्ञिक देवता और दयानन्द</u> :– अत्र कर्मकाण्डे देवता शब्देन वेदमन्त्राणां ग्रहणम्। गायत्र्यादीनि छन्दांसि ग्न्यादि देवता रण्यान्येव गृहयन्ते, तेषां कर्मकाण्डादिविधेद्योतकत्वात्[5] कर्मकाण्ड अर्थात् यज्ञक्रिया में मुख्य करके देवता शब्द से वेदमन्त्रों का ही ग्रहण करते हैं। क्योंकि जो गायत्र्यादि छन्द हैं, वे ही देवता कहाते हैं, और इन वेदमन्त्रों से ही सब विद्याओं का प्रकाश भी होता है। इसमें यह कारण है कि जिन–जिन मंत्रों में अग्नि आदि शब्द हैं, उन–उन मंत्रों का और उन–उन शब्दों के अर्थो का यथावत् प्रकाश होता है। इसके प्रमाण स्वरूप आचार्य दयानन्द ने यजुर्वेद[6] के दो मंत्र "**अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवता**" तथा "**अग्निं इतं पुरो दधे हव्यवाहमुपब्रुवे**" और निरूक्त से कर्म संपत्तिर्मन्त्रो वेदे = अथातो दैवतम्। तद्यानि नामानि प्राधान्यस्तुतीनां देवतानां तद्दैवतमित्याचक्षते। सैषा देवतोपपरीक्षा। यत्काम ऋषियस्यां देवतायामर्थपत्यमिच्छन् स्तुतिं प्रयुंक्ते सह दैवतः स मंत्रों भवति। तास् त्रिविध ऋचः। परोक्षकृताः, प्रत्यक्षकृता आध्यात्मिक्यश्च।[7] इन प्रमाणों को उद्धृत करते हुए आचार्य दयानन्द लिखते है कि– "कर्मणामग्निहोत्राद्यश्वमेधान्तानां शिल्प विद्यासाधनानां च सम्पत्तिः संम्पन्नता संयोगो भवति स मंत्रों वेदे देवताशब्देन गृह्यते आगे लिखते हैं– यानि नामानि मंत्रोक्तानि येषामर्थानां मंत्रेषु विद्यन्ते तानि सर्वाणि

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

द्विवेदी ज्योत्स्ना (2026). वैदिक कर्मकाण्ड और आचार्य दयानन्द, *International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(1), 59-67.*

देवतालिगड्यानि भवन्ति इत्यादि। वेद मंत्रो को करके अग्निहोत्र से लेके अश्वमेधपर्य्यन्त सब यज्ञों को तथा शिल्पविद्या और उनके साधनों की सम्पत्ति अर्थात् प्राप्ति होती, और कर्मकाण्ड को लेके मोक्षपर्यन्त सुख मिलता है, इसी हेतु से उनका नाम 'देवता' है। और भी लिखते हैं– जिन–जिन मंत्रों में देवतारूप से किसी विशेष अर्थ का नाम प्रसिद्ध नहीं दीख पड़ता, वहाँ–वहाँ यज्ञ आदि को देवता जानना होता है। अग्निमीडे इस मंत्र के भाष्य में जो तीन प्रकार का यज्ञ लिखा है, अर्थात् एक तो अग्निहोत्र से लेके अश्वमेध पर्य्यन्त, दूसरा प्रकृति से लेके पृथ्वी पर्यन्त जगत् का रचनरूप तथा शिल्पविद्या और तीसरा सत्संग आदि से जो विज्ञान और योगरूप यज्ञ है ये ही उन मंत्रों के देवता जानने चाहिए। तथा जिनसे यह यज्ञ सिद्ध होता है, वे यज्ञांग भी मंत्रों के देवता हैं। और जो इनसे भिन्न मंत्र है वे प्राजापत्यं अर्थात् उनका परमेश्वर ही देवता है। तथा जो मंत्र मनुष्यों का प्रतिपादन करते हैं उनके मनुष्य देवता हैं। इस विषय को स्पष्ट करते हुए आगे आचार्य लिखते हैं– कि कहीं पूर्वोक्त देवता कहते हैं, कहीं यज्ञादि कर्म कहीं माता–पिता विद्वान इत्यादि।[8]

देवता के विषय में विशेषकर आचार्य दयानन्द पारम्परिक ऋषि परम्परा या वैदिक परम्परा को मान्य करते हैं। नैरूक्तिक परम्परा को स्पष्ट मान्य किया है व उसके ही प्रमाण भी अधिकाधिक उद्धृत किये हैं।

अग्निहोत्र तथा संस्कार के सामान्योपचार सम्बंधी आचार्य दयानन्द के विचार

(क) <u>ऋत्विग</u> :– ऋत्विग ऋषि की परिभाषा दयानन्द संस्कार विधि में सामान्य प्रकरण में लिखते हैं कि– अच्छे विद्वान् धार्मिक, जितेन्द्रिय, कर्म करने में कुशल निर्लोभ परोपकारी दुर्व्यसनों से रहित कुलीन, सुशील, वैदिक मत वाले वेदविद् का वरण करें।[9] एक अन्य स्थान में लिखते हैं– धर्मात्मा शास्त्रोक्त विधि को पूर्णरीति से जानने हारा, विद्वान् सद्धमी, कुलीन, निर्व्यसनी, सुशील, वेदप्रिय, पूजनीय, सर्वोपकारी गृहस्थ की पुरोहित संज्ञा हैं।[10]

इसमें शतपथब्राह्मणकार लिखते हैं–

अथैक उद्ववदति–दीक्षितोऽयं ब्राह्मणो दीक्षितोऽय ब्राह्मण इति।

निवेदितमवैनमेतत्सन्त देवेभ्यो निवेदयति–अयं महावीया यो यज्ञं प्रापदिति.....

(शत.ब्रा. 3/2/1/39)

<u>यज्ञशाला</u> :– यज्ञ का देव पवित्र अर्थात् जहां स्थल वायु शुद्ध हो किसी प्रकार का उपद्रव न हो। ऐसे स्थल में यज्ञशाला का निर्माण होना चाहिए। आगे आचार्य श्री लिखते हैं– यज्ञशाला जिसको यज्ञमण्डप भी कहते हैं यह अधिक से अधिक 16 हाथ, सत्र चौरस चौकोण और न्यून से न्यून आठ हाथ की हो। इसे हम संस्कार विधि के सामान्य प्रकरण विस्तृत रूप से देख सकते हैं। यह कोई अलग से दी गई आर्यसमाजी यज्ञशाला नहीं अपितु सनातन परम्परा में भी यही हैं– "शुद्धे रमणीय देशे समचतुरस्रा दीर्घ चतुरस्रा वा अग्निहोत्र होमशाला कर्त्तव्या, वास्तुशास्त्रोक्त रीत्या। तस्याः प्राच्यां दक्षिणस्यां च दिशि एकैक द्वारं कार्यम्। स अग्निहोत्रशालेति गीयते।"[11] तथा

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

द्विवेदी ज्योत्स्ना (2026). वैदिक कर्मकाण्ड और आचार्य दयानन्द, *International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(1), 59-67.*

वाय्वाघुपद्रवाभावा यज्ञशाला प्रयोजनम्।
न च व्यादिकृतादोषा भवेयुरिति शोचिता।।[12]

यज्ञवेदी संस्कार विधि में यज्ञवेदी निर्माण के सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द सामान्य प्रकरण में लिखते हैं– यदि भूमि अशुद्ध हो तो यज्ञशाला की पृथ्वी और जितनी गहरी वेदी बनानी है, उतनी पृथ्वी दो दो हाथ खोद अशुद्ध मिट्टी निकालकर उसमें शुद्ध मिट्टी भरें। 16 हाथ की सम चौरस 12 खम्बे की वेदी की विस्तृत वेदी निर्माण की प्रक्रिया आचार्य दयानन्द ने रखी है। वेदि, वेदी, वेदिका सभी एकार्थवाची हैं। "**समविन्ददत तस्मात् वेदिर्नाम**"[13] ऐतरेय ब्राह्मण में भी प्रमाण है– "**ते यज्ञं वेद्यामन्वाविन्दन्।**"[14] उन देवों ने यज्ञ को वेदी में प्राप्त किया। वेदिः कुशमुष्टिः। जिस स्थान में पात्रादि का स्थापन, कुशप्रस्तरण व ऋत्विग् होता, यज्ञमान आदि आसादन करें वह वेदी है।

<u>यज्ञकुण्ड</u> :– कुण्ड शब्द "**कुडि रक्षणे**" "**कुडि दाहे**" इन दोनों धातुओं से बनाया जा सकता हैं। श्रौतयज्ञों में कुण्ड से संलग्न ही वेदी होती है। आहवनीय एवं गार्हपत्य कुण्डों के मध्य भाग में वेदिस्थल का निर्माण किया जाता है। गृह्य या स्मार्त यज्ञकार्यों में एवं काम्य यज्ञों में कुण्ड एवं वेदी एक ही अर्थ में प्रधानतः प्रचलित है। "**वेंदिः कुण्डं स्थण्डिल ततर्दिः**"।

श्रौतयज्ञों में कुण्ड पृथिवी के ऊपरी पृष्ठ पर स्मार्त्त या गृह्य यज्ञ में कुण्ड खोदकर तथा स्थण्डिल पृथिवी के ऊपरी भाग पृष्ठभाग में बनाया जाता है। संस्कार विधि में खोदकर वेदी बनाने प्रक्रिया महर्षि दयानन्द ने लिखा। प्रयोजन भेद और कार्य भेद से ऋषि ने अनके परिभाषा में वेदिनिर्माण निर्देश वहां प्राप्त हैं।[15]

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका के गणितविद्या विषय में महर्षि ने "तिकोन चौकोन, श्येनपक्षी के आकार और गोल आदि जो वेदि का आकार किया जाता है।" यह लिखा है। इससे ज्ञात होता है कि आचार्य श्री अनेकाकृति वेदियों को शास्त्र सम्मत मानते हैं। शाहपुराधीश श्री नाहरसिंह जी को पंचाग्नि कुण्ड स्थापित करने का आदेश देते हुए ऋषि ने कहा था कि "जैसा राजपुरोहित पुण्डरीक जी के यहां पंचाग्निकुण्ड बने है वैसे ही बनवाएं"[16] (भारत के तंत्र सनातम परम्परा के दो ग्रन्थ शारदातिलकम् लक्ष्मणाचार्यकृत) तथा त्रिपुरतापिनी उपनिषद् में दशाधिक आकृतियों का उल्लेख मिलता है। महर्षि दयानन्द ने संस्कारविधि तथा सत्यार्थ प्रकाश में चतुष्कोण वेदी को सामान्य रूप से सर्वकार्यों के लिये लिखा। इसमें आचार्य कोई अलग नहीं अपितु शास्त्रसम्मत और लोक सम्मत प्रमाण का ही प्रतिपादन करते हैं– "**सर्वसिद्धिकरै कुण्डं चतुरस्रमुदाहृतम्**"[17] यह लोक प्रसिद्ध है।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

द्विवेदी ज्योत्स्ना (2026). वैदिक कर्मकाण्ड और आचार्य दयानन्द, *International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(1), 59-67.*

शतपथ ब्राह्मण में उद्धरण प्राप्त होता हैं– **''सा वै पश्चात्वरीयसी स्यात् मध्ये सं हवारिता मध्ये संग्राह्या। सा वै प्राक् प्रवणा स्यात्। अथो उदक्प्रवणा दक्षिणाप्रवणा स्यात्।''**[18] श्रौत पदार्थ निर्वचन में स्थण्डिल यज्ञ का निर्देश प्राप्त हैं।

मृदानिर्मितं समचतुस्रं प्रतिदिशमष्टांगुल विस्तृतं होमामुसारेण
ततोधिकं वा न तु ततों यूनं चतुरंगुलोश्च मध्योन्तं स्थण्डिलं।

<u>वेदी सौन्दर्यकरण</u> :– महर्षि दयानन्द ने संस्कार विधि में वेदी और यज्ञशाला की सजाने का निर्देश किया है। ''नित्य मार्जन तथा गोमय से लेपन करें और कुंकुम, हल्दी, मैदा की लकीरों से सुभूषित करें।[19]

यज्ञशाला के चारों दिशा में चार द्वार रखें और यज्ञशाला के चारों ओर ध्वजा, पताका, पल्लव आदि बांधे।[20] सब द्वारों के सामने जल छिटकावे, सब द्वारों पर पुष्प, पल्लव तथा कदली स्तम्भ वा कदली के पत्रों को भी द्वारों की शोभा के लिए लगाएं।[21]

यहां भी ऋषि दयानन्द कर्मकाण्ड नियम की स्थापना ही करते हैं–

ऋग्वेद[22] में 'अरं कृण्वन्तु वेदिं' वेदी को अच्छी तरह सुभूषित करने का निर्देश हैं। इस विषय में शतपथ ब्राह्मण[23] में कहा गया है कि– स ह्यैस यज्ञ उवाच। नग्नताया वै बिभैमि इति। (यज्ञ बोला मुझे नग्नता से डर लगता है।) का ते अनग्नता इति (तेरी अनग्नता क्या हैं) अभित एव यां परिस्तृणीयुः इति। तस्या देतदग्निमभितः परिस्तृणन्ति'' मेरे चारों ओर परिस्तरण करो। तथा **''तां प्रतिमार्ष्टि''**[25] (यजमान उसे लीपे) उसका मार्गन कर सज्जित करें।

<u>पोडश संस्कार के पुनरूद्धारक दयानन्द</u> :– भारतीय संस्कार से सम्बद्ध प्राचीनतम प्रमाणित ग्रन्थ गृह्यसूत्र, धर्मसूत्र स्मृतियों में विशेष लिखित विधान प्राप्त होता है। हमें यह जानना होगा कि ये कर्मकाण्डीय विधान किसी पारलौकिक, काल्पनिक जीवन दर्शन के लिये नहीं हैं, अपितु लौकिक जीवन दर्शन, सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश का अंग है। हमारी सांस्कृतिक विस्तार के मूलाधार कहे जा सकते हैं। संस्कार शब्द न केवल कर्मकाण्ड के विषय में प्रयुक्त है बहुअर्थो में प्रयुक्त है। **''प्रोक्षणादिजन्य संस्कारोंयज्ञांगपुरोडाशेष्विति द्रव्यधर्मः।''**[25] स्नानाचमनादिजन्याः संस्कारा देहे उत्पद्यमानानि तदभिधानानि जीवे कत्प्यन्ते।[26] ''निसर्ग–संस्कार–विनीत–इत्यसौ नृपेण चक्रे युवराजशब्दभाक्''[27] ''संस्कारवत्येव गिरा मनीषी तया स पूतश्च विभूषितश्च'' ''प्रयुक्तसंस्कारइवाधिकवभौ।'' ''फलानुमेयाः प्रारम्भाः संस्काराः प्राक्तना इव।'' पर महर्षि दयानन्द कृत संस्कारविधि में संस्कार को एक औपचारिक अनुष्ठान केवल नहीं मानते अपितु संस्कार्य व्यक्ति के सम्पूर्ण

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

द्विवेदी ज्योत्स्ना (2026). वैदिक कर्मकाण्ड और आचार्य दयानन्द, *International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(1), 59-67.*

व्यक्तित्व का परिष्कार, शुद्धि और पूर्णता भी है। आचार्य का मानना है कि सविधि संस्कारों के अनुष्ठान से संस्कृत व्यक्ति में विलक्षण तथा अवर्णनीय गुणों का प्रादुर्भाव हो जाता हैं। गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि पर्यन्त संस्कारों में ऋषि दयानन्द का विचार देखा जा सकता हैं। शास्त्रकार भी यही मानते हैं– आत्मशरीरान्यतरनिष्ठो विहित क्रिया जन्योऽतिशयविशेषः[27] ''संस्कारः'' मीमांसको ने पाक संस्कारों का उल्लेख किया– गृह्य सूत्रों में सप्तपाक यज्ञों का समावेश हुआ है। हुत, प्रहुत, आहुत, शूलगव, बलिहरण प्रत्यवरोहण तथा अष्टकाहोम। गौतम धर्मसूत्र में 40 संस्कार वैखानस गृह्यसूत्र में 18, पारस्कर में 13 बौधायन गृह्य सूत्र में 11 संस्कारों का उल्लेख है। हारीत धर्म सूत्र में दो ही संस्कारों की चर्चा हैं– द्विविधः संस्कारों भवति, ब्राह्मों दैवश्च गर्भाधानदयः स्मार्त्रो ब्राह्मः। मनु के अनुसार गर्भाधान से लेकर मृत्यु पर्यन्त 13 स्मार्त्त संस्कार है। परवर्ती स्मृतियों में याज्ञवल्म्य एवं व्यास स्मृति में सर्वप्रथम 16 संस्कारों का उल्लेख हैं।[29] वर्तमान में षोडश संस्कार के लिए दो प्रामाणित पुस्तके हैं– एक दयानन्द कृत संस्कार विधि और भीमसेन शर्माकृत षोडश संस्कार विधि। आचार्य दयानन्द की संस्कार विधि शास्त्र प्रामाणिक होने के साथ–साथ एक व्यवस्थित दृष्टिकोण प्रदान करती हैं। इसकी कुछ विशेषताएं हैं–

1. गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक की सभी विधियों प्रामाणिक हैं।
2. शास्त्रोल्लेख विधि के साथ सामान्य अग्निहोत्र विधि का भी उल्लेख हैं।
3. विवाह विधि के साथ शालाकर्म विधि का उल्लेख लौकिक विधि का भी समावेश हैं।
4. वानप्रस्थ और सन्यास विधि इनके परिगणन गृह्यसूत्र धर्मसूत्र व मनुस्मृति में संस्कारों में नहीं है अपितु आश्रम विधि में हैं। चूंकि ऋषि मानव निर्माण के लिए संस्कारों को आवश्यक मानते है और वेदारम्भ उपनयन, विवाहदि संस्कार ब्रह्म धर्म, गृहस्थ के हैं तो उसी क्रम में वानप्रस्थ–सन्याय विधि को भी मान्य किया है। जो कि वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समुचित और शास्त्रीय मर्यादा के अन्तर्भूत हैं।
5. संस्कार विधि विशुद्ध वैदिक है। इसमें फलादेश, शुभ–अशुभ, दिन, दिशा, जादू, व्यक्ति, निरर्थक लौकिक अवैज्ञानिक प्रक्रिया को स्थान नहीं दिया गया हैं।

ऋषि दयानन्द ने मध्यकाल में फैले हुए अशुद्ध अवैदिक कर्मकाण्ड में लगाम लगाकर नया विचार दिया। वैदिक सन्ध्या पंचमहायज्ञ विधि, संस्कार विधि, सत्यार्थप्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका आदि ग्रन्थों में इस विषय में परिष्कृ ज्ञान उपलब्ध कराया गया हैं, वैज्ञानिक न केवल पारम्परिक अपितु शास्त्रानुमोदित प्रक्रिया को स्थापित कर कर्म मीमांसा को नया पथ दिया है। वर्तमान समय में यह एक उपोदय दार्शनिक पथ हैं।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

द्विवेदी ज्योत्स्ना (2026). वैदिक कर्मकाण्ड और आचार्य दयानन्द, *International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(1), 59-67.*

2. AUTHOR(S) CONTRIBUTION

The writers affirm that they have no connections to, or engagement with, any group or body that provides financial or non-financial assistance for the topics or resources covered in this manuscript.

3. CONFLICTS OF INTEREST

The authors declared no potential conflicts of interest with respect to the research, authorship, and/or publication of this article.

4. PLAGIARISM POLICY

All authors declare that any kind of violation of plagiarism, copyright and ethical matters will take care by all authors. Journal and editors are not liable for aforesaid matters.

5. SOURCES OF FUNDING

The authors received no financial aid to support for the research.

संदर्भ :–

1. संस्कार विधि–भूमिका (सप्तम संस्करण–रामलाल कपूर ट्रस्ट)
2. ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका वेदविषयविचार पृं. 56
3. मीमांसा दर्शन– 4/3/1 तथा 4/3/81
4. ऐतरेय ब्राह्मण– 1/2/1
5. दृष्टव्य– ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका– वेदविषयविचार
6. यजुर्वेद– अ. 14/मंत्र 20, यजु. अ. 22/मं. 17
7. निरूक्त अ. 7/खं. 1
8. दृष्टव्य– ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका वेदविषय विचार।
9. संस्कार विधि– सामान्य प्रकरण
10. तदेव– जातकर्म विधि
11. श्रौतपदार्थ निर्वचनम
12. होमपद्धति निरूपणम्। (नाट्यशास्त्र)।
13. शतपथ क्रा. 1/2/5/7
14. ऐतरेय ब्रा. 3/9
15. तुलनीय– यावान् कुण्डस्य विस्तारः खननं तावदिष्यते–वसिष्ठ पंचरात्र। वेदिनिर्माण।
16. आहवनीय गार्हपत्य, दाक्षिणाग्नि, आवसथ्य, सम्याग्निकुण्ड।

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License

ISSN (ELECTRONIC): 2945-3135

द्विवेदी ज्योत्स्ना (2026). वैदिक कर्मकाण्ड और आचार्य दयानन्द, *International Journal of Multidisciplinary Research & Reviews, 5(1), 59-67.*

17. शारदातिलकम, तृतीयपटल।
18. संस्कार विधि, सामान्य प्रकरण
19. संस्कार विधि, सामान्य प्रकरण
20. संस्कार विधि, शालाकर्म विधि
21. ऋग्वेद– 1/170/4
22. शतपथ 1/7/3/28
23. शपतथ 1/2/5/18
24. वाचस्पत्यम् बृहदभिधान 5/पृ. 5/88
25. वाचस्पत्यम् बृहदभिधान 5/पृ. 5/88
26. रघुवंशम् 3/35
27. कुमारसम्भव 1/28
28. रघुवंश 3/18 एवं 1/20
29. मीमांसा भाष्य 1/132
30. बौधायन् 1/1/1–12, पा. गृ. सू. 1/1/2–41
31. संस्काराद्रेश पृ. 10

The work is licensed under a Creative Commons Attribution Non Commercial 4.0 International License